NEERAJ®

लैंगिक समाजशास्त्र

(Sociology of Gender)

B.S.O.C.-107

B.A. Sociology (Hons.) - 3rd Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Harmeet Kaur

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

लैंगिक समाजशास्त्र
(SOCIOLOGY OF GENDER)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper Exam Held in July 2022 (Solved) 1

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. लिंग, यौन और कामुकता 1
(Gender, Sex and Sexuality)

2. पुरुषत्व का निर्माण और नारीत्व 17
(Production of Masculinity and Feminity)

3. अभिव्यक्ति और लिंग 29
(Embodiment and Gender)

4. अंतरानुभागीयता : प्रजाति, नृजातीयता और जाति 39
(Inter-sectionality: Race, Ethnicity and Caste)

5. परिवार, श्रम का लैंगिक विभाजन और संपत्ति 51
(Family, Sexual Division of Labour and Property)

6. लिंग और कार्य 61
(Gender and Work)

7. लिंग और विकास 70
(Gender and Development)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

8. लिंग, शक्ति, अधीनता और प्रतिरोध 86
(Gender, Power, Subordination and Resistance)

9. यौन हिंसा 101
(Sexual Violence)

10. औपनिवेशिक भारत में महिला आंदोलन : मार्ग और जड़ें 114
(Women's Movements in Colonial India: Routes and Roots)

11. समकालीन भारत में महिलाओं के आंदोलन : 1950 से 2000 के दशक 128
(Contemporary Women's Movements in India: 1950s to 2000s)

12. समलैंगिक आंदोलन 141
(Queer Movements)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

लैंगिक समाजशास्त्र
(Sociology of Gender)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. समाज में पितृसत्ता नियंत्रण की प्रक्रियाओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-8, प्रश्न 7

प्रश्न 2. पुरुषत्व और हिंसा के बीच संबंधों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-25, प्रश्न 10

प्रश्न 3. लैंगिक मूर्तरूप के प्रचलन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-29, 'दर्शनशास्त्र में शरीर के बढ़ते प्रभाव : प्राचीन एवं पारंपरिक इतिहास'

प्रश्न 4. भारत में जाति, वर्ग और लैंगिक के बीच प्रतिच्छेदन पर विस्तारपूर्वक लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-41, 'भारतीय संदर्भ में अंतरानुभागीयता : जाति, वर्ग और लिंग', पृष्ठ-46, प्रश्न 6

प्रश्न 5. समाज में महिलाओं की अधीनता में श्रम का लैंगिक विभाजन कैसे योगदान करता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-51, 'श्रम का यौन विभाजन', पृष्ठ-55, प्रश्न 3, पृष्ठ-58, प्रश्न 7

प्रश्न 6. भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए संवैधानिक प्रावधानों को विस्तार से लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-78, प्रश्न 10

प्रश्न 7. समाज में यौन हिंसा के परिणामों को विस्तारपूर्वक समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-105, प्रश्न 4

प्रश्न 8. जाति विरोधी आन्दोलनों में महिलाओं की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-119, प्रश्न 4

nn

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

लैंगिक समाजशास्त्र
(Sociology of Gender)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. लैंगिक सोपान-क्रम का सामाजिक महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'पदक्रम के रूप में लिंग', पृष्ठ-11, प्रश्न 11

प्रश्न 2. पुरुषत्व किस तरीके से कायम रहता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-17, 'पुरषत्व की अवधारणा', पृष्ठ-18, पुरुषत्व की उत्पत्ति और पुन: उत्पत्ति'

प्रश्न 3. ज्यां-पॉल सार्त्र द्वारा प्रस्तुत देह और अंत:-आत्मपरकता (inter-subjectivity) के विचार की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-34, प्रश्न 2

प्रश्न 4. जाति, वर्ग और लैंगिकता की अंत:-भागीयता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-41, 'भारतीय संदर्भ में अंतरानुभागीयता : जाति, वर्ग और लिंग', पृष्ठ-46, प्रश्न 6

प्रश्न 5. वैश्वीकरण महिला की कार्य सहभागिता को कैसे प्रभावित करती है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-67, प्रश्न 2

प्रश्न 6. महिलाओं की अधीनता से आप क्या समझते हैं? उचित उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-86, 'लैंगिक स्तरीकरण और महिलाओं की अधीनता की प्रकृति'

प्रश्न 7. समलैंगिक पुरुष आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-144, प्रश्न 2, पृष्ठ-145, पृष्ठ-3

प्रश्न 8. समकालीन महिला आंदोलन के तहत कौन-से बड़े मुद्दों को उठाया गया? व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-133, प्रश्न 3

nn

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

लैंगिक समाजशास्त्र
(SOCIOLOGY OF GENDER)

लिंग, यौन और कामुकता
(Gender, Sex and Sexuality)

1

परिचय

लिंग की अवधारणा सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक अंतरों को दर्शाती है, जो किसी व्यक्ति को निश्चित पहचान प्रदान करते हैं। लिंग पहचान जन्म से ही निर्दिष्ट होती है। विभिन्न लोगों के साथ हमारी अंत:क्रिया हमें स्वयं के व्यक्तित्व को आकार देने सहायक होती है। इस प्रकार एक पहचान हमें जन्म से मिलती है, दूसरी पहचान होने द्वारा अर्जित की जाती है। लिंग के विषय में सामाजिक प्रक्रियाओं द्वारा सीखा जाता है। हमारी पहचान समय और स्थान पर निर्भर करती है, क्योंकि इसका निर्माण समाज द्वारा होता है। लिंग हमारे विचारों व लैंगिकता को आकार देता है। यह किसी समाज के व्यक्त लक्षणों में से एक है। यौन शब्द का प्रयोग शारीरिक अंतरों और संचनात्मक अंतरों को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह स्त्री, पुरुष व अन्य प्रकार के लोगों को दर्शाता है। लिंग का यौन, कामुकता, जीवविज्ञान, समाजीकरण, श्रम आदि से गहरा संबंध है।

अध्याय का विहंगावलोकन

यौन और लिंग की समझ

यौन शब्द जहाँ संरचनात्मक और शारीरिक अंतरों को दर्शाता है, वहीं लिंग शब्द सामाजिक, शारीरिक व संस्कृतिक अंतरों को दर्शाता है।

ऐन ओकली (1985) के अनुसार लिंग संस्कृति का एक विषय है। यह पुरुषों को पुरुषत्व और स्त्रियों को सतीत्व के रूप में दर्शाता है। यौन स्थिर हो सकता है, परंतु समाजों में लिंग परिवर्तनशील होते हैं। लिंग के अनुसार पुरुष या स्त्री बनते हैं।

सिमोन डे व्यूवॉवर (1956) द्वारा अपनी पुस्तक 'द सैकेंड सेक्स' में कहा गया है कि कोई भी एक प्रेरित की तरह पैदा नहीं होती है, बल्कि एक स्त्री बन जाती है।

लिंग का कोई जैविक आधार नहीं, परंतु यौन के जैविक आधार हैं।

लिंग और जीव विज्ञान

लिंग एक सामाजिक और सांस्कृतिक तथ्य है, जबकि यौन एक जैविकीय तथ्य है। गिडिंग्स (2009) के प्राकृतिक अंतर के सिद्धांतों के अनुसार जैविकीय अंतर पुरुषों और स्त्रियों के भव्य जननेन्द्रिय, हार्मोन और गुणसूत्रों के कारण होते हैं, परंतु यह सिद्धांत जानवरों के व्यवहार के तथ्यों पर आधारित है, इसलिए ये मान्यताएँ तथ्यात्मक रूप से गलत हैं। हालांकि यह अंतर उनके प्रजनन कार्यों से संबंधित है, क्योंकि मानव जीवविज्ञान में कुछ भी जन्मजात नहीं होता, बल्कि कुछ युग समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आता है।

चूंकि प्राकृतिक अंतर प्राकृतिक कारकों पर आधारित है, इसलिए किसी व्यक्ति के हार्मोन, गुणसूत्र या शारीरिक वृद्धि और विकास जननेन्द्रिय एक समाज में व्यक्ति को निर्धारित नहीं करते हैं। भसीन (2003) के अनुसार मार्गरेट मीड की शोध ने यह सिद्ध किया कि पुरुषों व स्त्रियों के जीवविज्ञान, मर्दाना व जनाना समझे जाने वाले के मध्य आवश्यकता यह संबंध नहीं हैं। शरीर में यौन स्थायी व अपरिवर्तनीय नहीं हैं। मानवीय हस्तक्षेप द्वारा बाहरी वातावरण बदला जा सकता है, इसलिए बाहरी वातावरण में परिवर्तन द्वारा मनुष्य शरीर का आकार पाता है, परंतु प्राकृतिक अंतरों के कारण विभिन्न अंतर रहते हैं। सभी मनुष्यों में प्रजनन कार्य समान होने पर भी, जिस समाज में रहते हैं, उनके शरीर प्रभावित होते हैं। कहने का अर्थ सामाजिक मानक रूपों के शरीर की क्षमताओं को प्रभावित करते हैं अर्थात यौन बाहरी कारकों द्वारा प्रभावित होता है।

लैंगिक समाजीकरण

लैंगिक समाजीकरण को लिंग भेद या लिंग भावना कहते हैं। वह प्रक्रिया, जिसमें लैंगिक भूमिकाओं को प्रक्रियाओं और अन्य

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

सामाजिक अभिकरणों द्वारा सीखा जाता है। लैंगिक समाजीकरण है। समाज में पुरुष व स्त्रियों के नियम व अपेक्षाएँ अलग होती हैं, जोकि सांस्कृतिक रूप में निर्मित की जाती हैं और सामाजिक रूप में सुनिश्चित की जाती हैं। भूमिकाओं में भिन्नता लैंगिक असमानताएँ पैदा करती हैं।

लैंगिकता सकारात्मक व नकारात्मक अनुमोदनों द्वारा निर्मित होती है। कई समाजों में लिंग का निर्माण विभिन्न प्रकार से होता है; जैसे–मध्यवर्गीय व उच्च वर्णीय जाति की लड़की घर और विद्यालय तक सीमित हो जाती है, परंतु जनजातीय लड़की घर के बाहर घूम सकती है और स्वयं का व अपने परिवार का पालन-पोषण कर सकती है। इस प्रकार प्रत्येक वर्ग, जाति और क्षेत्र में लिंग निर्माण में भिन्नता हो सकती है। भारत में दक्षिण एशियाई समाजों में लैंगिक अंतरों का निर्माण प्रभावशाली तरीके से होता है, जैसे–पहनावे में भिन्नता, गुणों से भिन्नता, भूमिकाओं व जिम्मेदारियों में भिन्नता और लैंगिक गुणों में भिन्नता।

रूथ हटिले (1974) के अनुसार समाजीकरण चार प्रक्रियाओं द्वारा होता है, जैसे–परिचालन, प्रबंधन की क्रिया, मौखिक संप्रयोग और गतिविधि प्रदर्शन।

परिचालन या गठन करने के कार्य में बच्चे के साथ उनके लिंग से अपेक्षित व्यवहार नियमों के तहत आचरण किया जाता है; जैसे–लड़कों को स्वायत्त और स्वतंत्र मानना और लड़कियों को नाजुक व संकोची मानना।

प्रबंधन की क्रिया बच्चे को बुद्धि विकास में भौतिक वस्तुओं के प्रयोग को प्रदर्शित करती है, जैसे–लड़की को गुड़िया और बर्तन खेलने के लिए दिये जाते हैं और लड़कों को बंदूकें व कारें।

मौखिक संप्रयोग लैंगिक समाजीकण की प्रक्रिया में समाज रूप में उपयोग में लाए जाते हैं। बच्चे की प्रशंसा पर प्रतिक्रिया लिंग विशिष्ट होती है, जैसे–लड़कियों को कहा जाता है कि तुम कितनी सुंदर हो और लड़कों को तुम बड़े मजबूत लग रहे हो।

प्रत्येक स्त्री व पुरुष के अपेक्षित व्यवहार के अनुरूप बनाने में सकारात्मक और नकारात्मक अनुमोदन की भूमिका बहुत शक्तिशाली होती है।

पदक्रम के रूप में लिंग

लिंग एक पदक्रम है। यह सामाजिक स्तरीकरण का महत्त्वपूर्ण स्वरूप है। लिंग लोगों की भूमिकाओं को विशेष रूप से प्रभावित करता है। हालांकि पुरुष व स्त्रियों की भूमिकाएँ संस्कृति के कारण भिन्न हो सकती हैं। इस पदक्रम में पुरुष प्रथम होते हैं और उनका स्थान शीर्ष होता है, इसलिए शक्ति, प्रतिष्ठा और संपत्ति के संबंध में दोनों के पद असमान होते हैं। लिंग भेद सामाजिक असमानताओं का आधार है। यह आधार है–स्त्रियों के ऊपर पुरुषों का प्रभुत्व स्थापित करना।

पितृसत्तात्मक रूप में लैंगिक सक्रिय व्यवस्था को जाना जाता है, जिसका अर्थ है पिता या कुलपति, महिलाएँ, जवान पुरुष, बच्चे और नौकर एक प्रभुत्वशाली पुरुष के शासन के तहत है। इसका प्रयोग पुरुष के व्यवस्थित शासन को दर्शाता है। एक विचारधारा के अनुसार पुरुष श्रेष्ठ है। कमला भसीन (1993) के अनुसार पितृसत्ता निम्नलिखित पर पुरुष नियंत्रण द्वारा संचालित होती है–

1. महिलाओं की श्रम शक्ति,
2. महिलाओं के प्रजनन,
3. महिलाओं की कामुकता और गतिशीलता,
4. महिलाओं की संपत्ति और दूसरे आर्थिक संसाधन,
5. सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संस्थाएँ।

सिल्विया वॉलबी (1940) द्वारा अपनी पुस्तक 'Theorising' में पितृसत्तात्मकता की अवधारणा को इस प्रकार परिभाषित किया गया है, "सामाजिक, संरचनाओं और परंपराओ की एक व्यवस्था जिसमें पुरुष और वालवी की छह सरचनाएँ निम्नलिखित हैं, जो पितृसत्ता को संचालित करती हैं–

1. परिवार में उत्पादन संबंध,
2. वैज्ञानिक कार्य,
3. पितृसत्तात्मक राज्य,
4. पुरुष हिंसा,
5. कामुकता में पितृसत्तात्मक संबंध,
6. पितृसत्तात्मक सांस्कृतिक संस्थाएँ।

वॉलबी द्वारा पितृसत्तात्मकता के दो अलग-अलग स्वरूपों में अंतर किया गया है, जैसे–निजी पितृसत्तात्मकता और सार्वजनिक पितृसत्तात्मकता।

आर.डब्ल्यू. कोनेल ने श्रम, शक्ति और मानसिक शक्ति तीन पहलू व्यक्त किये हैं। श्रम यौन व लिंग के श्रम भिाजन को दर्शाता है। शक्ति सत्ता, हिंसा और संस्थाओं में सामाजिक संबंधों को दर्शाती है। मानसिक शक्ति अंतरंग, भावनात्मक और व्यक्तिगत संबंधों को दर्शाती है।

निवेदिता मेनन के अनुसार भारतीय परिवार निम्नलिखित पितृसत्तात्मक लक्षण रखता है–

1. पितृसत्ता,
2. पितृवंश,
3. पतिस्थानीयता।

लिंग और श्रम

लिंग और श्रम व्यवस्था श्रम के लैंगिक विभाजन के रूप में जानी जाती है, जहाँ पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं के कार्यों को कम आंका जाता है। कमला भसीन (2003) द्वारा श्रम और लिंग संबंधी गतिविधियों को तीन श्रेणियों में बाँटा गया है, जैसे–उत्पादन, प्रजनन और सामुदायिक गतिविधियाँ।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

1. उत्पादन–यह उत्पादन से संबंधित गतिविधियों को दर्शाता है। वे औपचारिक, अनौपचारिक वैतनिक या अवैतनिक हो सकती हैं, जैसे–स्त्रियों द्वारा कृषि कार्य, पारिवारिक विस्तार या उद्यम में महिला का कार्य, पुरुष पालनकर्त्ता और मुखिया आदि। यहाँ उत्पादन गतिविधियों में महिलाओं की गतिविधियों को कमतर आंका जाता है।

2. प्रजनन–प्रजनन जैविकीय और सामाजिक प्रक्रिया है। जैविकीय प्रजनन यानी नये मानव को जन्म देना। सामाजिक प्रजनन यानी मानव अस्तित्व और रख-रखाव से संबंधित गतिविधियाँ। प्रजनन क्रियाएँ मानव श्रम पैदा करती हैं। पितृसत्ता संरचना में सभी अवैतनिक कार्य महिला वर्ग में आते हैं। इन कार्यों को घरेलू जिम्मेदारियाँ माना गया है। इस प्रकार महिलाओं के अवैतनिक श्रम पर अर्थव्यवस्था निर्भर है, क्योंकि यह कार्य उत्तरजीविका में अहम भूमिका निभाते हैं।

3. समुदाय–सामुदायिक गतिविधियाँ सामुदायिक जीवन को संचालित व संगठित करने के लिए जरूरी होती हैं, जिनमें स्त्री व पुरुष दोनों की भागीदारी रहती है।

श्रम का लैंगिक विभाजन कौशल के लैंगिक विभाजन का मार्ग अग्रसर करता है। महिलाओं और पुरुषों में कौशल और योग्यताएँ उनकी भूमिकाओं के अनुसार भिन्न होती हैं। श्रम का लैंगिक विभाजन असमानताओं और पदानुक्रमों को दर्शाता है, क्योंकि दोनों के श्रम में भिन्नता है, जैसे–महिलाओं को शारीरिक रूप से कमजोर मानना और भारी कार्य के लिए अयोग्य मानना, परंतु फिर भी सभी भारी घरेलू कार्य महिलाएँ करती हैं। वर्तमान समय में पुरुष होटलों एवं रेस्टोरेंट में कार्य करते हैं। खाना बनाते हैं, तो यह वेतन के बदले में कार्य है, जबकि महिला का यही कार्य अवैतनिक है।

ऐन ओकली के अनुसार औद्योगिक देशों में व्यवसायों में लिंग के आधार पर भेदभाव है, जैसे–कामकाजी महिलाओं का कपड़ा, वस्त्र निर्माण और खाद्य प्रसंस्करण के कार्य में होना। उच्च प्रतिष्ठा और आमदनी वाली नौकरियाँ पुरुष करते हैं। यानी पुरुषों के कार्यों का अधिक महत्त्व है। स्त्री और पुरुष में समान कौशल होने पर भी पुरुष का अधिक महत्त्व रहता है।

सिल्विया वॉलबी (1998) के अनुसार पूंजीवाद को पितृसत्ता के लैंगिक विभाजन द्वारा समान फायदा हुआ है। एंजेल्स (2004) के अनुसार बुर्जुआ कामकाजी वर्ग की महिलाएँ परिवार के बाहर कार्य नहीं करतीं, क्योंकि वे अपने पतियों पर निर्भर रहती हैं। कामकाजी महिलाओं के पास श्रमिक के रूप में अधिक स्वतंत्रता है, परंतु वे घर-परिवार और बाहरी कामों दोनों का मुश्किल से गठबंधन करती हैं।

श्रम का लैंगिक विभाजन महिलाओं को सीमित करता है। उनमें कितनी भी कुशलता हो, परंतु वे परिवार की प्राथमिक जिम्मेदारी में रहती हैं। यहाँ पर कांच की दीवार की अवधारणा का प्रयोग नौकरी-पेशा महिलाओं के अलगाव को दर्शाने के लिए किया गया है, क्योंकि नौकरियाँ विशेष रूप से पुरुष संबंधी हैं और महिलाएँ निश्चित प्रकार की नौकरियों पर केंद्रित है। कांच की दीवार या कांच की छत के कारण महिलाएँ गतिहीनता में फंस जाती हैं और श्रम बाजार में भेदभाव का सामना करती हैं।

लिंग और लैंगिकता (कामुकता)

पुरुषत्व या स्त्रीत्व या आत्म पहचान की भावना और व्यवहार जिस पहचान द्वारा प्रदर्शित होते हैं, उसे कामुकता कहते हैं। निवेदिता मेनन के अनुसार 16वीं शताब्दी से पहले यूरोप और 19वीं शताब्दी के प्रारंभ तक दक्षिण एशिया व अफ्रीका में स्त्री व पुरुष के मध्य भेद स्पष्ट नहीं था। लिंग वर्णक्रम में विभिन्न श्रेणियां मौजूद हैं, जैसे–विषम लैंगिक, समलैंगिक, समपक्षलैंगिक, परालैंगिक, समलैंगिक स्त्री-पुरुष, उभयलिंगी, अलैंगिक और सर्वलैंगिक।

जाति, प्रजाति और धर्म ऐसी संस्थाएँ हैं, जो पितृसत्तात्मक परिवारों में कामुकता को नियंत्रित करती हैं। निवेदिता मेनन द्वारा अपनी पुस्तक में एक नारीवादी दृष्टिकोण की तरह व्यक्त किया गया है कि मातृत्व एक जैविकीय तथ्य है और पितृत्व एक सामाजिक परिकलन है, परंतु फिर भी एक स्त्री के गर्भ में पल रहा बच्चा उसके पिता के नाम से जाना जाता है, क्योंकि पितृसत्ता पुरुष वंश द्वारा संचालित होती है, इसलिए महिलाओं की काम भावना को नियंत्रित करना व विनियमित करना पितृसत्ता के अस्तित्व से संबंधित है।

पितृसत्तात्मक समाजों में महिलाओं की काममुकता पुरुषों के नियंत्रण व अधिकार में है। यौन हिंसा लड़ाई, प्रजातीय, सांप्रादायिक और जाति हिंसा का एक हथियार है। मारिया मिज (1988) के अनुसार यौन शोषण शोषित वर्गों को अनुशासित करने का एक साधन है। निम्न वर्ग और उच्च वर्ग की महिलाएँ दोनों की कामुकता को नियंत्रित किया जाता है, परंतु उच्च वर्ग की महिलाएँ इसका अधिक शिकार होती हैं।

गतिविधियाँ

प्रश्न 1. आप क्या सोचते हैं कि आपकी स्वयं की और आपके मित्रों की जिंदगी पर पितृसत्ता का क्या प्रभाव है? इस पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–चूंकि हम लोग भारतीय परिवारों से संबंधित हैं, इसलिए हमारी स्वयं की और मित्रों की जिंदगी को पितृसत्ता द्वारा प्रभावित किया गया है; जैसेकि वर्तमान समय में भी विवाह होने पर पत्नी पति के घर जाती है। पिता का विवाह तक अपनी पुत्री पर पूरा अधिकार रहता है–उसके पालन-पोषण, शिक्षा से लेकर विवाह तक। पुत्री के विवाह के बाद यह अधिकार पति को हस्तांतरित किया जाता है यानी विवाह के बाद पति का उत्तरदायित्व होता है

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

कि वह अपनी पत्नी की देखभाल करे। हालांकि दहेज के रूप में पिता द्वारा काफी वस्तुएँ दी जाती हैं, ताकि उसकी पुत्री का आने वाला जीवन सुखमय हो सके। इसी प्रकार जब वह अपने पुत्र का विवाह करता है, तो वधू के रूप में उसके घर लड़की आती है और दहेज के रूप में वस्तुओं को साथ लाती है। आज भी पितृवंश में संपत्ति और परिवार का नाम पिता से पुत्र तक और पुत्र से अपने पुत्र को हस्तांतरित होता है। महिलाओं को विवाह के समय वस्तु रूप में जो पूँजी दी जाती है, वही उसकी उस घर से विदाई के समय की आखिरी भेंट होती है। उसके बाद महिला का अपने पिता या भाई की संपत्ति पर किसी प्रकार का अधिकार या दावा नहीं रहता। उसका यह अधिकार ससुराल में होता है, वहाँ भी पिता की संपत्ति पुत्र को दी जाती है।

कई लोग ऐसे देखे गये हैं, जोकि एकल एवं संयुक्त परिवारों में रहते हैं। एकल परिवारों में पति का पत्नी पर अधिकार रहता है, यदि वह कामकाजी है, तो उसकी आय पर भी अधिकार रहता है। कुछ परिवारों में संयुक्त परिवार को बेहतर माना गया है, क्योंकि इन परिवारों में एकजुटता बनी रहती है और परिवार के सभी सदस्य एक साथ अपनी संस्कृति से जुड़े रहते हैं, परंतु संयुक्त परिवारों में घरेलू कार्यों की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं पर है। यदि कोई स्त्री कामकाजी है, तो उसे घरेलू कार्यों के साथ-साथ बाहरी कार्यों पर भी ध्यान केंद्रित करना होता है, जिससे उनके ऊपर कार्य का भार दुगुना हो जाता है।

पितृसत्ता एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें पुरुष बुजुर्ग का परिवार समूह पर पूर्ण अधिकार रहता है। संसाधनों पर पुरुषों का अधिकार रहता है। शिक्षा, विवाह, नौकरी, व्यवाय के लिए संघर्ष करना पड़ता है, क्योंकि पितृसत्ता जन्म से ही लड़कों को विशेष अधिकार देती है। पितृसत्ता महिलाओं की मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक और वित्तीय भलाई की रक्षा करने और देखभाल करने के लिए बाध्य है। पितृसत्ता एक विकासवादी सुरक्षात्मक सामाजिक भूमिका और सामाजिक निर्माण है, जिसने महिलाओं को पूरी तरह प्रभावित किया हुआ है। हालांकि इस व्यवस्था में स्त्रियों की पूर्ण उपेक्षा होती है और पुरुष अपनी शक्ति का दुरुपयोग भी कर सकते हैं। समय चाहे कितना भी आधुनिक हो जाए, इस व्यवस्था में स्त्रियों को पुरुषों के समान स्थान प्रदान नहीं किया जाता। वह व्यवस्था समाज में पुरुषों को अधिक अधिकार प्रदान करती है। हमारे भारत में लगभग सभी समाजों और संस्कृतियों में पितृसत्तात्मकता का रूप मौजूद है, जिसमें परिवार के उत्पादन संबंधों, वैज्ञानिक कार्यों, पुरुष हिंसा और पितृसत्तात्मक संस्थाओं द्वारा पितृसत्ता संचालित होती है और भी समाज में पुरुष प्रभुत्व को देखा जा सकता है। हमारे जीवन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में पितृसत्ता का स्वरूप स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

प्रश्न 2. नारीवादी एक विचारधारा है, जो प्रकट करती है कि समाज में पितृसत्ता की व्यवस्था विद्यमान है और यह इसका विनाश करती है। क्या आप आपने आप को एक नारीवादी मानते हैं? इस पर एक चर्चा कीजिए।

उत्तर–नारीवादी दृष्टिकोण व्यक्त करता है कि समाज में पितृसत्ता की व्यवस्था मौजूद है। नारीवादी विचारधारा व्यक्त करती है कि लगभग सभी औद्योगिक देशों में ज्यादातर व्यवसायों में लिंग के आधार पर उल्लेखनीय भेदभाव पाया गया है। हालांकि कई व्यवसाय विशेष रूप से नारी से संबंधित हैं यानी एक गृहिणी से संबंधित हैं; जैसेकि खाना बनाने का कार्य, परंतु इस क्षेत्र में भी महिलाओं को कम आंका गया है, क्योंकि बड़े-बड़े होटलों और रेस्टोरेंट में बावर्ची का कार्य पुरुष संभाल रहे हैं। पितृसत्ता व्यवस्था के तहत यदि महिलाएँ इस क्षेत्र में पदों पर कार्यरत भी हैं, तो उन्हें पुरुष कर्मचारी की अपेक्षा कम वेतन और कम महत्त्व दिया जाता है। इस प्रकार औद्योगिक क्षेत्रों में भी नौकरियों पर अधिकतर प्रभुत्व पुरुषों का है। चाहे व्यवसाय इकाई छोटी हो या बड़ी, पुरुषों का प्रभुत्व है। औद्योगिक देशों में श्रम का लैंगिक विभाजन मौजूद है। हालांकि पूंजीवाद को पितृसत्ता से श्रम लैंगिक विभाजन के द्वारा लाभ हुआ। समाजों में उत्पादन पुरुषों के माध्यम से महिलाओं द्वारा श्रम निर्वाह और पुनरुत्पादन के बिना संभव नहीं हो सकता।

महिलाओं में स्तर के आधार पर पितृसत्ता व्यवस्था में लैंगिकता को नियंत्रित व अव्यस्थित किया जाता है, जैसेकि एक घरेलू महिला घर के अवैतनिक कार्य करती है। वह पूर्ण रूप से अपने पति पर निर्भर रहती है, क्योंकि वह स्वयं एक संपत्ति होती हैं, इसलिए उसका कार्य वंश के उत्तराधिकारी को पैदा करना होता है, वहीं दूसरी ओर एक कामकाजी महिला वर्ग है, जो घरेलू कार्यों के साथ-साथ बाहरी कार्यों को भी संभालता है। महिला घर-परिवार का पोषण करने के लिए घर से बाहर जाकर वेतन कमाती है। ऐसे में पितृसत्ता व्यवस्था में उससे एक अच्छी पत्नी और एक अच्छे कर्मचारी की भूमिका की माँग की जाती है। महिलाएँ अपने परिवार की पारिवारिक जिम्मेदारी से दबे होने के कारण अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करना सीखती हैं और उच्च पद पर जाने के लिए उसे घरेलू जिम्मदारियाँ रोकती हैं।

पितृसत्तात्मक समाजों में स्त्री की काम भावना के नियंत्रण का प्रबंधन किया जाता है। उसके गर्भ में पल रहे बच्चे को समाज में बच्चे के पिता का नाम प्रदान किया जाता है और बच्चा पति का कहलाता है। हालांकि मातृत्व एक जैविकीय तथ्य है और पितृत्व एक सामाजिक तथ्य है। पितृसत्ता पुरुष वंश द्वारा संचालित होती है। जहाँ पिता से पुत्र को संपत्ति और अन्य आर्थिक संसाधन हस्तांतरित होते हैं। महिलाओं या घर की पुत्री का इससे कोई संबंध नहीं होता और न ही उसे कोई अधिकार दिया जाता है। पुरुषों द्वारा कामुक व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए स्त्रियों पर

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com